स्व. श्री ब्रिजलाल बियाणी

जन्म : ६ दिसम्बर १८९५ मृत्यु : २४ सितम्बर १९६८

माहेश्वरी समाज की जिन विभूतियों ने समाज के हृदय को अधिक सपर्श किया उनमें श्री ब्रिजलालजी बियाणी की सर्वप्रथम गणना होती है। श्री बियाणी जी के जीवन पर जब हम दृष्टिपात करते हैं तो हमें एक ऐसे व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं जिसका समाज सुधार, राजनीति, साहित्य आदि सभी दिशाओं में योगदान रहा है।

श्री बियाणी जी का जन्म हाथरून-जिला अकोला में ६ दिसम्बर १८९५ को हुआ। आपके पिता श्री नन्दलालजी गांव में नगर सेठ कहलाते थे बचपन से ही मातृविहिन बियाणीजी ने प्राथमिक शिक्षा गांव में पूरी की। फिर अपने फूफा जी के यहाँ सीरपुर में शिक्षण के लिये रहे। यहाँ से वापस अकोला आकर मैट्रीक की। नागपुर के मारीस कालेज में स्नातक हुए। १९२० में गांधीजी के आह्वान पर कानून की द्वितीय वर्ष की पढ़ाई छोड़कर स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े और सुखी जीवन की कल्पना छोड़ दी।

विदर्भ में कांग्रेस संगठन को सशक्त बनाने में आपकी मुख्य भूमिका थी। आप छात्र जीवन में ही राजनीति चर्चा में भाग लेने लगे थे। विदर्भ कांग्रेस के आप १३ वर्षो तक अध्यक्ष रहे। स्वतंत्रता संग्राम में आपने चार बार जेल यात्रा की और लगभग साढ़े छः वर्षो तक आप बंदी के रूप में रहे। १५ अगस्त १९४७ को मराठावाड़ा में यूनियन जैक के उतरने पर निजाम के झण्डे के स्थान पर तिरगें झण्डे को फहराकर आपने राष्ट्रीय भावना का परिचय दिया था। स्वतंत्रता के पूर्व और उपरान्त सक्रिय राजनीति में विभिन्न कार्यपालिकाओं की सदस्यता में, १९४८ से १९५२ तक लोक सभा दिल्ली निर्वाचित सदस्य के साथ-साथ आप संविधान सभा के सदस्य भी रहे। १९५२ में पुराने मध्य प्रदेश की एसेम्बली के सदस्य और पं. रविशंकर शुक्ल के मंत्रीमंडल में ४ वर्ष तक वित्तमंत्री, विदर्भ में इण्टक के संस्थापक अध्यक्ष, १९५७ से लेकर १९५९ तक मुम्बई एसेम्बली के सदस्य रहे। स्वतंत्र विदर्भ राज्य की मांग को लेकर मुम्बई विधानसभा से त्यागपत्र दे दिया। विदर्भ प्रदेश बनाने हेतु मुम्बई से नागपुर तक पद यात्रा कर विराट आन्दोलन को अग्रगामी किया। उन्हें इस सिलसिलें में गिरफ्तार करके जेल में बंद कर दिया गया। विदर्भ के लिए जीवन भर संघर्ष करने के कारण ही आपको 'विदर्भ केशरी' की उपाधि से विभूषित किया गया। यद्यपि १९६२ में विदर्भ के प्रश्न को लेकर लड़े लोक सभा के चुनाव में उन्हें पराजय हुई और उनका 'विदर्भ राज्य' का सपना साकार नहीं हो सका, उनका विदर्भ के स्वाभिमान तथा स्वतंत्रता के लिये किया गया संघर्ष सदैव स्मरणीय होगा।

१९२१ में अकोला में आयोजित माहेश्वरी महासभा के चौथे अधिवेशन से स्वागत मंत्री और मंत्री के रूप में जुड़े हुए आप १९२७ में महासभा के पंढ़रपुर अधिवेशन में प्रधानमंत्री, १९३१ में देवलगांव अधिवेशन में सभापति चुने गये। सन् १९४७ में अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन का छठा अधिवेशन मुम्बई में आपकी अध्यक्षता में हुआ। सामाजिक क्रांति के अग्रदूत श्री बियाणीजी ने पर्दा व वृद्ध विवाह, बाल-विवाह जैसी कुरीतियों का जमकर विरोध किया। वे विधवा विवाह के पक्षधर थे। शादी-ब्याह में धन की मांग, दहेज के विरोधी थे। 'सुधार घर से ही प्रारम्भ होता है' के कथनानुसार आपकी धर्मपत्नी सौ. सावित्री ने पर्दे को त्यागकर आपके सार्वजनिक जीवन में कंधे से कंधा मिलाकर आपका साथ दिया। ये अन्यों के लिये तत्कालीन समाज में एक उदाहरण था। अपने एक मात्र पुत्र कमल किशोरजी का अन्तर्जतीय विवाह किया।

माहेश्वरी समाज में कोलावर माहेश्वरियों को लेकर पंचायत के सामाजिक बहिष्कार', अधिकार के विरूद्ध श्री बियाणी जी ने जेहाद छेड़ा। आपकी प्रेरणा से १९२७ के महासभा के पंढ़रपुर में आपके प्रधानमंत्रीत्व में आयोजित सम्मेलन में इसके विरूद्ध प्रस्ताव पारित हुआ। समाज को विघटन से बचाकर एकता के सूत्र में पिरोने में उनका यह एक महत्वपूर्ण योगदान था।

श्री बियाणी जी एक राजनीतिक योद्धा ही नही कुशल पत्रकार, साहित्यकार भी थे। उनके साहित्य सृजन में कल्पना कानन, धरती और आकाश, विनोवा जीवन की झाँकी, जेल में, त्रिविधा आदि सम्मिलित हैं। अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संचालक रहे। इस श्रृंखला में 'राजस्थान', नवराजस्थान, प्रवाह, और विश्व लोक सम्मिलित थे। मराठी भाषा में मातृभूमि नामक दैनिक पत्र का प्रकाशन किया। हिन्दी के प्रचार के लिये राजस्थान प्रेस की स्थापना की। नागपुर में बना 'मोर हिन्दी भवन' उनके प्रयासों का स्थूल रूप है। आप जीवन पर्यन्त विदर्भ हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद को सुशोभित करते रहे। वे एक ओजस्वी और मधुर वक्ता भी थे।

२४ सितम्बर १९६८ को बियाणी जी महाप्रयाण कर गये। वह अपने पीछे परिवार में तीन संतान-श्रीमती कमला देवी शारदा व्याहता श्री करणजी शारदा एडवोकेट, श्रीमती सरलादेवी बिड़ला व्याहता श्री बसंत कुमारजी बिड़ला (पुत्र राष्ट्रविभूति श्री घनश्यामदासजी बिड़ला) और श्री कमल किशोरजी बियाणी छोड़ गये।

श्री विश्वम्भर प्रसाद शर्मा ने 'विदर्भ केशरी श्री बियाणीजी' नामक पुस्तक में श्री बियाणी जी के योगदान की चर्चा करते हुए निम्न लिखा है। जो इस प्रखर पुन्ज गरिमा को उजागर करता है। ''जिस प्रकार तपोधन श्री कृष्णदासजी जाजू ने माहेश्वरी महासभा के पौधे को सींचकर बड़ा किया, माहेश्वरी समाज में जीवन जागृति पैदा की, उसी प्रकार श्री बियाणी ने भी इस पौधे को अपनी प्रतिभा सम्पूर्ण शक्ति लगाकर पुष्पित और पल्लवित किया।''